सामाजिक क्रिया– तार्किक एवं अतार्किक
PARETO'S SOCIAL ACTION : LOGICAL AND NON-LOGICAL

अनिल कुमार पटेल
स0 प्रो0 समाजशास्त्र
आर0 एम0 डब्लू0 कॉलेज, नवादा

सामाजिक क्रिया – तर्कसंगत एवं अतर्कसंगत क्रिया

आइये सबसे पहले सामाजिक क्रिया को जानने का प्रयास करते हैं। आखिर सामाजिक क्रिया क्या है? कोई भी व्यवहार जो किसी उद्देश्य प्राप्ति के लिए किया जाता है वह सामाजिक क्रिया है। अगर उद्देश्य नही है तो वह सामाजिक क्रिया नही है। क्रियाएं अनेक प्रकार की हो सकती है। लेकिन हमारा यहा सम्बन्ध सामाजिक क्रिया से है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। आवश्यकता पूर्ति के लिए उसे अन्य व्यक्तियों से सहारा लेना होता है, साधन जुटाने होते है, अन्य व्यक्तियो के संदर्भ में व्यवहार करना होता है। जिसके फलस्वरूप सामाजिक क्रिया अस्तित्व में आती है। सामाजिक क्रिया के लिए कर्ता, परिस्थित व प्रेरणा का होना आवश्यक है। मैक्स वेबर लिखते है कि, सामाजिक क्रिया वह क्रिया है जिसमें कर्ता या कर्ताओ के द्वारा लगाये गये प्रातीतिक अर्थ के अनुसार दूसरे व्यक्तियों के मनोभाव एवं क्रियाओ का समावेश हो और उन्ही के अनुसार उनकी गतिविधि हो। एवं पारसन्स कहते है कि सामाजिक क्रिया कर्ता कि परिस्थिति व्यवस्था में वह प्रक्रिया है जिसका अकेले कर्ता के लिए अथवा सामूहिक रूप में उस समूह के व्यक्तियो के लिए प्रेरणात्मक महत्व होता है। सामाजिक क्रिया के आवश्यक तत्वो मे कर्ता, लक्ष्य, परिस्थित व प्रेरणा का होना आवश्यक है। अतः आप यहा सामाजिक क्रिया से भली भाति परिचित हो गए होंगे। आइए अब हम परेटो की सामाजिक क्रिया को जानने का प्रयास करते हैं। परेटो ने अपने अध्ययन में समाज में पाई जाने वाली मानवीय क्रियाओं का वर्गीकरण दो भागों में किया है।–

- अ) तर्कसंगत क्रिया (Logical Action) तथा
- ब) अतर्कसंगत क्रिया (Non-Logical Action)।

परेटो ने तार्किक व अतार्किक क्रियाओ का उल्लेख किया है, उनके अनुसार अतार्किक क्रिया विशेष रूप से महत्वपुर्ण है। परेटो के विचार में इस प्रकार का वर्गीकरण अत्यन्त ही आवश्यक है। आपने इन दोनों प्रकार की क्रियाओं को दो आधारों में बांटा है। परेटो के मतानुसार तर्कसंगत क्रियाओं का आधार सामान्यतः वस्तुनिष्ठ होता है। जबकि अतर्कसंगत क्रियाओं का आधार व्यक्तिनिष्ठ होता है। इस कारण तर्कसंगत और अतर्कसंगत क्रिया को समझने से पहले वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ का अर्थ समझ लेना उचित होगा।

परेटो का कथन है कि प्रत्येक सामाजिक घटना के दो पहलू हो सकते हैं–

- 1) जैसा कि घटना वास्तव में है
- 2) जैसी कि वह किसी व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क में अंकित है।

प्रथम प्रकार की घटना को परेटो ने वस्तुनिष्ठ तथा द्वितीय को व्यक्तिनिष्ठ कहा है। आपका कथन है कि इस प्रकार का विभाजन बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि एक केमिस्ट को जोकि अपनी प्रयोगशाला में प्रयोगात्मक क्रिया में व्यस्त है, और एक उस व्यक्ति जो जादू की क्रिया दिखा रहा है, एक ही श्रेणी के अन्तर्गत रखना या मान लेना कदापि उचित न होगा। प्रथम व्यक्ति की क्रिया का आधार वस्तुनिष्ठ है, इसलिए वह वैज्ञानिक है। जबकि दूसरा व्यक्ति केवल व्यक्तिनिष्ठ आधारों पर कार्य करता है। इसलिए वह वैज्ञानिक नही है परेटो के अनुसार वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ आधारों का भेद महत्वपूर्ण, उपयोगी तथा उचित है; फिर भी इन दोनों के बीच कोई दृढ़ विभाजक रेखा खींचना संभव नहीं है।

परेटो ने वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ आधारों का भी स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है कि प्रत्येक सामाजिक या व्यक्तिगत क्रिया के दो पक्ष होते हैं– लक्ष्य और साधन। हम किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कुछ साधनों का प्रयोग करते हैं; परन्तु ये साधन किस प्रकार के होंगे या उनकी क्या प्रकृति होगी यह उन कार्यों की प्रकृति पर निर्भर करता है। जिन्हें कि हम लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए काम में लाते हैं। जैसे– कुछ ऐसे कार्य होते हैं जोकि लक्ष्य तथा साधन दोनों के ही दृष्टि से उचित होते हैं दूसरे शब्दों में, ऐसे कार्य ठीक तथा अनुभवसिद्ध होते हैं एवं तार्किक आधार पर लक्ष्य और साधन के बीच सामंजस्य स्थापित करते हैं। इस प्रकार के यथार्थ तथा तर्कयुक्त कार्यों को वस्तुनिष्ठ कहते हैं। इसके विपरीत, ऐसे भी कार्य होते हैं जिनमें लक्ष्य और साधन के बीच तार्किक संगति का अभाव होता है, अर्थात् ऐसे कार्य जोकि यथार्थ, अनुभवसिद्ध तथा तर्कसंगत नहीं होते हैं, उनको व्यक्तिनिष्ठ कहते हैं। अतः स्पष्ट है कि परेटो के मतानुसार वे कार्य, जिनका आधार वस्तुनिष्ठ है, तर्कसंगत क्रिया हैं और वे कार्य, जिनका कि आधार व्यक्तिनिष्ठ है। अतर्कसंगत क्रिया हैं।

इस प्रकार ''परेटो के लिए क्रिया की प्रमुख विशेषता तर्क के साथ उसका सम्बन्ध है।'' इस कथन के अनुसार, प्रत्येक क्रिया का एक तार्किक आधार होता है। यह जरूरी नहीं है कि यह तार्किक आधार सर्वमान्य या सबके द्वारा स्वीकृत या प्रयोगसिद्ध ही हो। हो सकता है कि क्रिया को करने वाला कर्ता के अपने दृष्टिकोण से उस क्रिया का कोई तार्किक आधार हो और उसी तार्किक आधार पर वह अपनी क्रिया का औचित्य दर्शाने का प्रयत्न करें। परेटो ने इसे ही 'भ्रान्त–तर्क' की संज्ञा दी है। इसके विपरीत, यह भी हो सकता है कि एक क्रिया का तार्किक आधार इस प्रकार का हो जोकि वास्तव में प्रयोगसिद्ध हो। और भी स्पष्ट रूप में, ऐसी अनेक क्रियाएं होती हैं। जिनके लक्ष्य तथा साधन के बीच सामंजस्य होता है उसे तर्क के आधार पर वास्तव में समझाया जा सकता है, परन्तु ऐसी भी क्रियाएं होती हैं जिनके लक्ष्य तथा साधनों के बीच पाए जाने वाले तथाकथित सामंजस्य को उन क्रियाओं को करने वाला कर्ता अपने तर्क द्वारा समझा तो अवश्य ही देता है परन्तु वह तर्क वास्तव में भ्रान्त–तर्क ही होता है।

इस प्रकार क्रिया का संबंध तर्क से होता अवश्य ही है, चाहे वह तर्क प्रामाणिक तर्क हो या भ्रान्त तर्क। जब एक क्रिया प्रामाणिक तर्क (अर्थात ऐसा तर्क जो केवल कर्ता के दृष्टिकोण से ही नहीं, वरन् उस विषय में अधिक व्यापक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की दृष्टिकोण से सही है) से संबंधित होती है। तो उसे तर्कसंगत क्रिया कहते हैं, और जब क्रिया केवल एक ऐसे तर्क से संबंधित है जोकि केवल कर्ता की दृष्टिकोण से उचित है तो उसे अतर्कसंगत क्रिया कहेंगे। इसलिए परेटो के मतानुसार क्रिया की किसी भी विवेचना व विश्लेषण में हमें उसके अन्तर्निहित तर्क के सम्बन्ध में सचेत रहना चाहिए और यह देखना चाहिए कि किस प्रकार के तर्क से वह क्रिया सम्बन्धित है, क्योंकि इसी के आधार पर क्रिया की वास्तविक प्रकृति अर्थात् वह

व्यक्तिनिष्ठ है या वस्तुनिष्ठ है, यह जानना हमारे लिए सम्भव व सरल होगा। वैसे तो प्रत्येक कर्ता के द्वारा निरन्तर यही प्रयत्न होता रहता है कि वह अपने कार्य या क्रिया को इस भांति सम्पन्न करें कि वह अधिक–से–अधिक मात्रा में वस्तुनिष्ठ ही प्रतीत हो, चाहे वास्तव में वह वैसा भले ही ना हो। क्रिया की प्रक्रिया में तर्क का सर्वप्रमुख कार्य एक क्रिया–विशेष के औचित्य को प्रमाणित करना होता है। इस प्रमाण का आधार सदैव वस्तुनिष्ठ ही होगा, इसकी कोई निश्चितता नहीं होती। व्यक्तिनिष्ठ आधारों पर भी क्रिया का औचित्य प्रमाणित किया जा सकता है।

इस प्रकार परेटो के अनुसार, मानवीय क्रियाएं तर्कसंगत हो सकती हैं और अतर्कसंगत भी। तर्कसंगत क्रिया ही वास्तव में प्रामाणिक होती हैं। क्योंकि इस प्रकार की क्रियाएं निरीक्षण और अनुभव के क्षेत्र में अन्तर्गत होती हैं। इसीलिए तर्कसंगत क्रियाएं विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं, जबकि अतर्कसंगत क्रियाएं काल्पनिक होने तथा निरीक्षण औ अनुभवसिद्ध न होने के कारण विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आती हैं, यद्यपि इनका अध्ययन विज्ञान द्वारा होता है। उक्त लिखित विवेचना से यह स्पष्ट है कि परेटो के अनुसार, ''केवल वे क्रियाएं तर्कसंगत हैं, जोकि तर्कपूर्ण रीति से साधन को लक्ष्य के साथ जोड़ती हैं, केवल उस कर्ता की दृष्टि से नहीं जो उस क्रिया को करता है बल्कि उन अन्य व्यक्तियों की दृष्टि से भी जो उसके विषय में अधिक व्यापक ज्ञान रखते हैं।''

परेटो के अनुसार मानव–क्रियाओं के संबंध में एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि सर्वत्र और सभी कालों में तर्कसंगत क्रियाओं का नहीं, बल्कि अतर्कसंगत क्रियाओं का ही बोलबाला रहा है। दूसरे शब्दों में, मानव की अधिकतर क्रियाएं अतर्कसंगत होती हैं। ये क्रियाएं तर्क से नहीं बल्कि एक विशिष्ट मानसिक अवस्था से उत्पन्न होती हैं। इसीलिए उस क्रिया को करने वाला उस क्रिया के पक्ष में अनेक युक्तियां पेश करता है तथा उसे उचित प्रमाणित करने का प्रयत्न करता रहता है। उदाहरणार्थ, सामाजिक निषेध को ही लिया जा सकता है। इस प्रकार के निषेध विशिष्ट मानसिक अवस्था की ही उपज होते हैं। साथ ही, वे निषेध उचित हैं, इसे प्रमाणित करने के लिए ईश्वरीय आज्ञा से लेकर पौराणिक गाथा तक का सहारा लिया जाता है। परन्तु वास्तव में इनमें से कोई भी निषेध तर्कसंगत नहीं होता। तार्किक रुप में इन निषेधों की व्याख्या नहीं की जा सकती है। परन्तु परेटो के मतानुसार इसका यह अर्थ कदापि नही है कि
इस प्रकार के निषेध या अन्य अतर्कसंगत क्रियाएं आवश्वक रुप में बेकार तथा अनुपयोगी ही होती है। एक निषेध का समुदाय–विशेष में महत्वपूर्ण स्थान तथा कार्य हो सकता है; जबकि वही निषेध दूसरे समाज या समुदाय के लिए निरर्थक और हानिकारक भी हो सकता है। एक समुदाय–विशेष में कोई सामाजिक निषेध तब पनपता है जबकि किसी कार्य के प्रति उस समुदाय के लोगों का घृणा–भाव हो और वे उस कार्य को उचित और अच्छा न मानते हों।
इस कारण इस प्रकार के समाजिक निषेधों को केवल सामूहिक अभिमति प्राप्त होती है; वे तर्कसंगत नही भी हो सकते हैं और बहुधा होते भी नही है। परन्तु इनको मानने वाले तथा इन्हें लागू करने वाले सभी लोग इनके पक्ष में अनेक तर्को को प्रस्तुत करते है, ताकि उनके अतार्किक रुप छिप जाएं या उस विषय में लोग कुछ अनुमान न लगा सकें। परेटो के लिए सामाजिक जीवन की सम्पूर्ण घटना समीकरणों की वह श्रृंखला है जिनमें कि उस समाज के लोग अपनी अतर्कसंगत क्रियाओं की तर्कसंगत क्रियाओं की वेशभूषा पहनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करने का उत्कट प्रयास करते है कि उनकी क्रियाओं का अतर्कसंगत रुप भी उन्हें तथा दुसरों का तर्कसंगत लगने लगे। तार्किक व अतार्किक क्रिया के सामने मानव के समक्ष तीन प्रकार की समस्याए आती है। पहली यह है कि लक्ष्य व्यक्तिगत व सामाजिक दोनो हो सकते है। लक्ष्य के ज्ञान के

अभाव मे साधन को तार्किक व अतार्किक समक्षना एक कठिन कार्य है। दुसरी यह है कि जब लक्ष्य का संबध पारलौकिक हो तब तो जानना और भी कठिन हो जाता है कि लक्ष्य व साधन के बीच उचित संबध है या नही। तीसरा यह है कि उचित व अनुचित कार्यो का पता लगाना भी एक कठिन कार्य है क्योकि एक कार्य जो एक के लिए उचित है हो सकता है कि वह दुसरे के लिए अनुचित हो। अतः अन कठिनाइयो के कारण ही मानव समाज मे अतार्किक क्रियाओं की प्रधानता रही है। और समाज का अस्तित्व भी इसी पर निर्भर करता है। यहा प्रश्न यह है कि मानव अतार्किक क्रियाए क्यों करता है। इनके परेटो ने कुछ कारक बताये है। जिसमें प्रमुख्यता से भ्रान्त तर्क है। भ्रान्त तर्कों पर आधारित क्रियाएं अतार्किक होती हैं। कुछ ऐसी क्रियाएं होती हैं जिनके लक्ष्य और साधनों को कर्ता अनेक ऐसे तर्कों के आधार पर स्पष्ट कर देता है कि जो केवल उसी के दृष्टिकोण से उचित है। इस तरह के तर्क को भ्रान्त तर्क कहते हैं। इसके साथ ही चालक, मनोभाव व स्वार्थ आदि है। अतः आप यहा परेटो के सामाजिक क्रिया में तार्किक व आतार्किक को समक्ष गये होगें।

परेटो द्वारा प्रस्तुत तार्किक तथा अतार्किक क्रिया की अवधारणा को सार रूप में ऐरों द्वारा दिए गए निम्नांकित चित्र की सहायता से समझा जा सकता है।

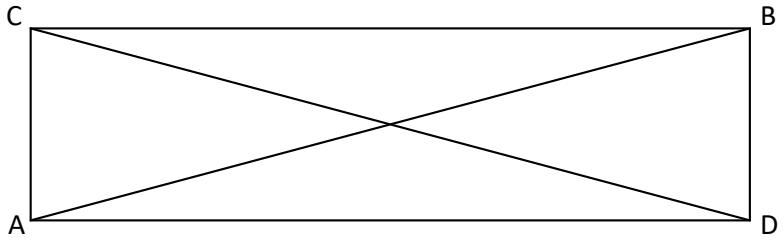

चित्र नं0 : 1– तार्किक तथा अतार्किक क्रिया

प्रस्तुत चित्र में 'A' को 'B' से मिलाने वाली रेखा अतार्किक क्रियाओं को स्पष्ट करती है जबकि 'C' और 'D' को जोड़ने वाली रेखा तार्किक क्रियाओं की प्रकृति को प्रदर्शित करती है। स्पष्ट है कि अतार्किक क्रिया एक ऐसे कर्ता से सम्बन्धित होती है जिसकी मानसिक दशा का हमें कोई स्पष्ट ज्ञान नहीं होता और इस तरह वह कर्ता विभिन्न प्रकार के सिद्धांतों तथा विचारधाराओं को तोड़–मरोड़ कर अपनी क्रियाओं और सम्बन्धों के औचित्य को प्रमाणित करता है।

दूसरी ओर, तार्किक क्रियाओं में कर्ता के व्यवहार तथा उसकी विभिन्न अभिव्यक्तियों के बीच एक तार्किक और स्पष्ट संगति विद्यमान है। तार्किक तथा अतार्किक क्रियाओं के इस सम्पूर्ण विश्लेषण द्वारा परेटो ने यह स्पष्ट किया कि अतार्किक क्रियाएं भले ही समाज में व्यापक रूप से पायी जाती हो लेकिन यह प्रमाणिक और अनुभवसिद्ध न होने के कारण किसी विज्ञान की अध्ययन–वस्तु नहीं बन सकतीं। समाजशास्त्र स्वयं एक ऐसा विज्ञान है जो तार्किक–प्रयोगात्मक पद्धति के आधार पर ही विकसित हो सकता है। इस दृष्टिकोण से समाजशास्त्रीय अध्ययनों में केवल तार्किक क्रियाओं का ही समावेश होना चाहिए। इसप्रकार आप यहा समाज में क्रियाये से परिचित हो गये होगें।

सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा है कि इटालियन सामाजिक विचारक विलफ्रेडो परेटो की मानवीय क्रियाओं की व्याख्या के बारे में पढ़ा कि मानवीय क्रियाओं को दो भागों में बांटा गया– तार्किक क्रिया एवं अतार्किक क्रिया। जिसमें बताया गया कि तार्किक व अतार्किक क्रिया के दो पक्ष होते हैं– लक्ष्य और साधन। कुछ क्रियाएं ऐसी होती हैं जिनके द्वारा तार्किक आधार पर लक्ष्य और साधनों के बीच एक स्पष्ट सामंजस्य देखने को मिलता है। इन्हीं क्रियाओं को तार्किक/वस्तुनिष्ठ क्रियाएं कहते हैं। वहीं दूसरी ओर अनेक क्रियाएं अथवा मानव व्यवहार इस प्रकार के होते हैं जिनमें लक्ष्य व साधनों बीच कोई तार्किक संगति नहीं होती। यह क्रियाएं भावना प्रधान होती हैं। इसलिए इन्हें अतार्किक क्रिया बताया गया है। इन तार्किक व अतार्किक क्रियाओं द्वारा समाज में मानवीय क्रियाओं को समझाया गया है। और साथ में विशिष्ट चालक जिसमें मूल प्रवृतियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है एवं भ्रान्त तर्क जिसमें कर्ता के भ्रान्त विचार तर्क होते हैं को भी स्पष्टतः बताया गया है। परेटो कहते हैं कि अतार्किक क्रियाओं को निरर्थक तथा व्याधिकीय नहीं समझना चाहिये अपितु इनसे तार्किक क्रियाओं के पक्षों को स्पष्ट करना चाहिए।

****